Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

Spet. 2020 Special Issue- 29 Vol. 2

Social Vital Issues

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Dr. Paralkar S.D.

Co-Editor
Dr. Nandkumar Kumbharikar

Index

1. "An Approach To The Interrelationship Between Biodiversity And Geography" — 5
   Dr. Syed Rafat Ali Osman Ali
2. Economic planning in India: Conceptional view — 11
   Dr. Madhukar Aghav
3. Role of libraries in research and higher education — 15
   Dr. Maske Dhyneshwar
4. A study of tourism places in Maharashtra: A geographical view — 18
   Dr.Deshmukh S.B.
5. Mental Health between Yogic Practitioners and Non Yogic Practitioners- A Dietary Base — 23
   Niranjan Krishanappa Akmar
6. A study of position of irrigation projects in Maharashtra: Geographical view — 24
   Dr.Doke.A.T.
7. India-China relations: A political perspective — 28
   Dr.Talekar.C.K.
8. A study of the Indian Kabaddi through Pro Kabaddi league and its seasonal performances — 32
   Dr. A. D. Tekale
9. A study of Women's sports participation and performances in Olympic games — 38
   Dr.Wangujare.S.A., Mr.Molane.B.S.
10. Sports Nutrition: An Overview onSports Nutrition for fitness — 43
    Dr.Karad.P.L
11. A study of Deforestation in Indiaits Causes and Consequences: A Geographical view — 47
    Dr.Gaikwad.J.R
12. AtmaNirbhar Bharat Abhiyan — 51
    Dr. Balaji Ananda Sable
13. A Geographical Study of Landuse Efficiency In Ambajogai Tahsil of Beed District — 55
    Dr. Jaideep Ramkrishna Solunke
14. Satish Alekar's *The Dread Departure*: A Condemnation on Modern Society and Hindu Death Rituals — 58
    Dr. Anant Vithalrao Jadhav
15. Politics of Maharashtra: Issues and challenges — 61
    Mr.Gondkar.T.D.
16. A study of advantages and disadvantages of Indian primer League in India — 65
    Dr.Pandhare.S.M.
17. **केरल में हिन्दीभाषा और साहित्य का विकास** — 69
    डॉ. सुप्रिया पी
18. गाँधीजी के गांधीवाद तत्वगत तथा सैद्धांतिक विवेचन — 72
    डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर
19. **मीडिया का बाजार और बाजार की मीडिया** — 74
    डॉ. रनमाळ पांडुरंग
20. यशपाल के उपन्यास : सामाजिक विमर्श का यथार्थ — 77
    प्रा. महमंद रऊफ इब्राहिम
21. शिवमूति कृत 'आखिरी छलाँग' में कृषक जीवन का यथार्थ — 79
    डॉ. सुरेश मुंढे

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 29 Vol. 2 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Sept. 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

केरल में हिन्दीभाषा और साहित्य का विकास

डॉ. सुप्रिया पी
सहायक आचार्य, हिंदी एवं तुलनात्मकसाहित्य विभाग , केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, तेजस्विनी हिल्स, पोस्ट पेरिया
कासरगोड, केरल- 671320

राष्ट्रीय आन्दोलन केकर्म धार महात्मा गाँधी ने जनमानस में एकता स्थापित करनेकेलिए अनेक प्रकारके अभियान चलाएथे। इस कड़ीमें हिन्दी प्रचार का विचार उनके मन में आया। दक्षिण और उत्तर को जोड़ने की सशक्त कड़ी के रूप में उन्होंने हिन्दी की हिमायत और व काल तक थी। 28 मार्च 1918 को मध्य प्रदेश के इंदौर में संपन्न 'आठवें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मलेन' महात्मा गाँधी अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित हुए थे। मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य समितिने इस अधिवेशन को आथित्य प्रदान किया था। इसके आगामी कदम के रूप में 1918 में 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' स्थापना हुई तथा इस संस्थाके तत्वावधान में दक्षिण में हिन्दी के प्रचार का कार्य करने की व्यवस्था की गयी। कन्नड़, मलयालम, तेलुगू और तमिल भाषा – भाषियों को हिन्दी सीखने के लिए इस संस्था की मदद और मार्गदर्शन से व्यापक अवसर मिलें। हिन्दी सीखना राष्ट्रीय कर्तव्य है | 'हिन्दी समझो भारत को समझो'– ऐसा आदर्शमयी वातावरण हिंदीतर प्रदेशों में पैदा हो गया था। केरलकेसन्दर्भमेंहिन्दीभाषा और साहित्य के विकास पर यहाँ चर्चा हो रही है।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की कड़ी में और भी संस्थाएँ केरल में हिन्दी प्रचार के लिए आगे आए – केरल हिन्दी प्रचार सभा (तिरुवनंतपुरम), हिन्दीविद्यापीठ (तिरुवनंतपुरम), हिन्दीविद्यापीठ (पय्यान्नूर), दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (एरनाकुलम), राष्ट्रभाषा हिन्दी संस्थान (तिरुवनंतपुरम), जगन्नाथ हिन्दी महाविद्यालय (तलश्शेरी), केरल हिन्दी साहित्य अकादमी (तिरुवनंतपुरम), केरल हिन्दी साहित्य मंडल (कोच्ची), हिन्दी साहित्य संगम (पालक्काड), राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन (तिरुवनंतपुरम), भाषा समन्वयवेदी (कोपीककोड), विकल्प (त्रिशूर)।

केरल के इन हिन्दी प्रचारक संस्थाओं में आरंभ में केवल प्रचार पक्ष प्रधानथा। आरंभिक प्रचारकों में – पी. नारायण, पी राघवन, गोविंदन नम्बीशन, वी. कौमुदी, ई.के.दिवाकरन पोट्टी, के. रवि वर्मा, चाततुकुट्टी मास्टर, के.एम. सामुवेल- दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के माध्यम से आए थे।हिन्दी भाषा का विकास एवं प्रचार, व्याकरण – ज्ञान प्रदान करना, हिन्दी के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जगाना, हिन्दी में रचनाएँ करना, मलयालम की कहानियों और कविताओं के हिन्दी में अनुवाद करना, सर्वोदय सन्देश के प्रचार तक ही प्रचारकों का ध्यान गया था।इन प्रचारकों ने अपने अपने क्षेत्र में हिन्दी प्रचार के लिए विद्यालय खोले।हिन्दी सिखाने के लिए गोविंदन नम्बीशन ने पय्यनूर में एक विद्यालय खोला था – 'पय्यनूर हिन्दी विद्यालय'। 'केरल बरदोली' नाम से वह जगह मशहूर हो गयी थी | सेवानिवृत होकर कौमुदी ने बच्चों को निशुल्क हिन्दी पढ़ाया।के.एल.सामुवेल ने कालिकट (कोपीक्कोड) के तली में 'हिन्दी विद्यालय' की स्थापना की।हिन्दी प्रचार के लिए रुपायित स्वैछिक संस्थाओं के पदार्पण से केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में जो विस्तार हुआ उसके स्वरूप के चार आयाम हैं –

1) मौलिक लेखन
2) अनुवाद चिंतन
3) तुलनात्मक साहित्य
4) साहित्यिक पत्रकारिता

मौलिक लेखन तथा अनुवाद चिंतन

हिन्दी भाषा प्रचारकों के हिन्दी ज्ञान का प्रयोजन प्रचार तक सीमित न रहा।साहित्यिक चेतना का विकास उनका विराट लक्ष्य बन गया। आज उसका साहित्यिक पक्ष उभरकर आया है। केरल के हिन्दी रचनाकार हिन्दी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति कर रहें है। अध्यापन एवं प्रचार से अभिव्यक्ति की और संस्थाएँ बढ़ी है। हिन्दी को अपनी सृजन भाषा चुनकर मौलिक लेखन का कार्य सुचारू है।डॉ. जी. गोपिनाथन की 'सह्याद्री की चट्टानें', रामन नायर के 'सागर की लहरें' उल्लेखनीय हैं। डॉ.के.सी.अजय कुमार के चार मौलिक उपन्यास हिन्दी में लिखे हैं – टैगोर एक जीवनी, सत्यवान सावित्री, कवि कुलगुरु कालिदास, आदि शंकरम।

हिन्दी सहित्य की कई मौलिक कृतियों का अनुवाद हुआ। हिन्दी भाषियों और मलयालम भाषियों को विपुल मात्रा में इससे लाभ मिला।दिवाकरन पोट्टी के सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को प्रेमचंद के साहित्य ने प्रभावित किया था। प्रेमचंद के संपूर्ण उपन्यास साहित्य का अनुवाद 'प्रेमचंद प्रचारक' बनकर इन्होंने मलयालम में प्रस्तुत किया।हिन्दी भाषा की कृतियों का अनुवाद मलयालम में आए जिससे मलयालम पाठक लाभान्वित हुए।'मातृभूमि' साप्ताहिक के संपादक एन. वी. कृष्णवारियार ने हिन्दी के माध्यम से भारतीय कहानियों का अनुवाद तैयार करके 'गणतंत्र विशेषांक' निकाला। ज्ञानपीठ पुरस्कृत जी. शंकरन कुरुप की कविताओं की विशिष्टता से उन्होंने हिन्दी पाठकों को परिचित कराया।जी.एन. पिल्लै ने जी. शंकरन कुरुप के 'ओटक्कुषल' का हिन्दी अनुवाद तथा सुमित्रानंदन पंत के 'चिदंबरा' का अनुवाद मलयालम में प्रस्तुत किया।

के. रवि वर्मा ने बशीर, बालामणि अम्मा, इटश्शेरी की रचनाओं का मलयालम से हिन्दी में अनुवाद किया तथा हिन्दी से प्रेमचंद वृंदावनलाल वर्मा की रचनाओं का अनुवाद मलयालम में किया।हिन्दी के माध्यम से बंगला सीखकर रवि वर्मा ने ताराशंकर बंदोपाध्याय, विभूतिनारायण, आशापूर्णा देवी, जरासंध की रचनाओं का बंगला से मलयालम में अनुवाद किया।अभयदेव ने हिन्दी – मलयालम बृहद शब्दकोश का निर्माण किया।फादर कामिल बुल्के की 'रामकथा उत्पति और विकास' ग्रंथ का अनुवाद मलयालम में किया। चाततुकुट्टी मास्टर ने कुमारनाशान कृत खंडकाव्य 'वीनापूव' का हिन्दी अनुवाद किया।हरिवंशराय बच्चन के 'मधुशाला', सरोजिनी नायडू की कविता 'Coromandel Fishes' का मलयालम अनुवाद प्रस्तुत किया। तत्तोत बालकृष्णन ने रामचंद्र शुक्ल के 'चिंतामणि' के निबंधों का मलयालम में अनुवाद किया। हिन्दी साहित्य की अवधारणा को मजबूत बनाने का आवहान इन प्रचारकों के